महेन्द्र भीष्म के साहित्य में किन्नर कथा और किन्नर व्यथा

(शोध-आलेख)

लेखक
डॉ. दीपिका परमार
गांधी नगर, गुजरात

सारांश(Abstract):—
आज विश्व धरातल पर किन्नरों के मानवाधिकारों के लिए प्रयास हो रहे है। इनके अस्तित्व की असली पहचान तब्मिली जब कोर्ट ने केन्द्र ने और सभी राज्य की सरकारों ने ट्रांसपपिपल को पहचान देने का आदेश दिया। आज फिर भी उनकी सरकार के द्वारा सुविधाएं मिलने पर भी अज्ञानतावश अपने अधिकारों का उपयोग नहीं कर पा रहे है। आज नौकरी न मिलना, बेरोजगारी, शिक्षा का अभाव, समाज का नकारना जैसी अनेक समस्याएँ थर्ड जेंडर' के रूप में सामने है। आज ऐसी ही एक कहानी 'माई' जो महेन्द्र भीष्म द्वारा लिखी हुई है, जिसमें माई के जीवन से जुड़ी समस्याओं की कथा और व्यथा को द्शने का प्रयास किया गया है।

बीज शब्द– माई, किन्नर, वृद्धा, बुजुर्ग

> **ट्रेन के विलम्ब से लेकर दिवास्वप्न तक का सफर था :-**

ट्रेन के आने में विलम्ब था। रेलवे का आधुनिकीकरण और अनुकरण भी वर्तमान की कठिनाईयों को पैदा करता है। ट्रेन की पुछपरक करने के लिए मैंने रेलवे में कार्यरत अपने इंजीनियर मित्र रघुराज को फोन करके अपनी खीज उन पर उतारी। अब मैंने रेलवे प्लेटफार्म की बैंच पर ही अपना सूटकेस व भोजन सामग्री से भरा थैला रख दिया। भोजन सामग्री में उनकी बेटी पूजा की मनपसंद बेसनए अजवाइन व हींग से बनी खरखरी नमकीन शबिसनोटियाश भी काफी मात्रा में मधू ने रखी थी। मैं अपना मोबाइल देख के बोर होकर बैंच के उपर लटके पंखे की शीतल हवा से मेरी आँख लग गई और मैंने दिवास्वपन में देखा कि कोई महिला मेरा थेला उठाकर लिए जा रही है। क्षणिक स्वपन से निंद्रा टूटी और आंखें खोली और मैंने देखा तो सच में सूटकेस के पास से खाने का थेला गायब था।

>.. **इतनी उम्रदराज औरत और ऐसी हरकत :-**

दरअसल आज इतनी भीड़ भी नहीं थी रेलवे स्टेशन में फिर इतना भारी भरकम थैला कौन उठा ले गयाघ मैंने इधर उधर मेरी नजर दौड़ाई तब रेलवे पुल की ओर धीरे-धीरे सीढ़ियों चढ़ती एक महिला की पीठ पर थैला रखा था। मैं पलक झपकते ही एक साथ तीन-चार सीढ़ियाँ लांघते हुए चोरनी के आगे खड़ा हो गया। मैंने क्रोधावश उसका कंधा झिँझोडा वह उम्र में काफी ज्यादा वृद्धा थी। मेरे मन में प्रश्न उठा श्इतनी उम्रदराज औरत और ऐसी हरकतः 'मैने वृद्धा को पूछा आपको चोरी करते हुए शर्म नहीं आई क्या समझकर मेरा थेला उठाकर चुराकर भागी हो। वृद्धा ने थैला सीढ़ी पर रख दिया और दोनों हाथ जोड़ते हुए मौन हो गई और अपनी गलती स्वीकार करते हुए कहने लगी - अब जाने भी दो मुझे माफ करो। 'ईश्वर तुम्हें खुश रखे और तुम्हारे घर परिवार का भला करें।' वृद्धा धीरे-धीरे सीढ़ियाँ चढ़ने लग गई उसकी कातर सजल आँखों के सामने मेरा गुस्सा तिरोहित हो चुका था। अब में अपना थैला लेकर मौन होकर अपनी बेंच पर आकर बैठ गया। अब धीरे-धीरे सीढ़ियाँ चढ़ती हुई वृद्धा की पीठ देखते हुए मुझसे रहा नहीं गया मेरे हृदय की संवेदनाएँ किसी कोने में सोई हुई क्षमा-याचना और प्रायश्वित के लिए सजल नेत्रों के साथ जागृत हो गई थी। मेरा मन मस्तिष्क काफी सवालों के घेरे में था कि आखिर क्यों इस उम्र में चोरी करनी पड़ रही हैघ यह सब बातें मेरे मानसपटल पर आते ही मैं दुबारा वृद्धा के सामने जाकर खड़ा हो गया। वृद्धा ने अपने दोनों हाथ जोड़ लिए और अपनी मौन वाणी को वाचा देते हुए कहा मुझसे गलती हो गई साहब! क्षमा करें और मुझ असहाय पर दया कीजिये और जाने दीजिये।

मैंने वृद्धा के दोनों हाथ पकड़कर उसे सहारा देते अपनी बेंच की ओर ले आया और पानी पिलाते हुए पूछा भूखी हो क्या माई? उसने दो उंगली बताकर इशारा किया कि उसने दो दिन से कुछ भी नहीं खाया था। मैंने अपना टिफिन खोलकर भूखी माई के सामने धर दिया आलू की सूखी सब्जी और पूडियाँ मन से खाई इस बीच में मैं दो चाय भी बनवा लाया। भोजन से वृद्धा के चेहरे पर एक अलग ही आभा झलक रही थी। ऊर्जा से भरपूर माई ने अपनी दोनों हथेलियों से मेरी बलेया ली और सिर पर हाथ रखते हुए बोली, सदा खुश रहो ईश्वर तुम्हारे घर-परिवार, बाल-बच्चों का भला करें।

> **माई की मर्दानी आवाज ने पहचान करवाई के माई वृद्ध भेष में किन्नर थी :-**

माई के आर्शीवचन सुनते ही में सुन्न हो गया। माई की मर्दानी आवाज ने मुझे सोचने पर विवश कर दिया कि मंझोला कद, कुछ थुलथुल सी काठी, दांए गाल पर बड़ा-सा मस्सा, जिसमें तीन चार लम्बे श्वेत बाल, तन पर ब्लाउज-साड़ी धारण किए यह वृद्धा माई स्त्री भेष में किन्नर है? वृद्ध माई अपना परिचय देते हुए बोली "बेटा! में वक्त की मारी किन्नर हूँ। आज मेरे जैसे गिने चूने परोकारियों से ही मुझे इज्जत- सम्मान मिला, वरना घर-परिवार और समाज से शोषित, प्रताड़ित, तिरस्कृत और बहिष्कृत रही हूँ। मुझे हमेशा सबसे उपेक्षा ही मिली।' '* मर्दानी आवाज और बोलने के हावभाव से वृद्ध माई किन्नर है यह बात स्पष्ट हो चुकी थी।

> **वृद्ध किन्नर माई ने अपने जीवन की आपबीती बतायी :-**

श्अब ज्यादा क्यॉं कहूँए बेटा! मुझे गैरों से ज्यादा हमारे अपनो ने ही, और अपनी बिरादरी के लोगों ने ही ठगा और इस हाल में मुझे धकेल दिया और आज हालात की मजबूर पहली बार चोरी की और पकड़ी गई। यह तो आप जैसे नेक-दिल इंसान का सामान था तो आपने मुझे जाने दियाए वरना कोई और होता तो.....- ' "2 माई का मन भर आया और आँखों से जलाधार बह निकली।

माई की बातें सुनकर मेरे मन और मस्तिष्क में विचारों का सैलाब उमड़ पड़ा। माई मेरी तरफ देखते हुए करुण स्वर में बोली भैया! चलती हूँ, भगवान आपको खुश रखे ऐसा बोल के अपने दोनों हाथ ऊपर उठाये और चलने के लिए खुद को तैयार किया। मैं उन्हें ऐसे जाते हुए देख खुद को रोक नहीं पाया और श्श्माईए कहाँ जाओगी तुमघ कहाँ रहती होघ तुम्हारा अतीत क्या है? मुझे इस बात से कोई सरोकार नहीं और मैं अब ये भी जानता हूँ कि तुम किन्नर हो फिर भी मैं तुमसे यह कहना चाहता हूँ अगर तुम चाहो तो अपना बाकी का शेष जीवन मेरे घर में एक वरिष्ठ सदस्य की हैसियत से रह सकती हो। मैंने माई को दोनों हाथ मजबूती से पकड़ते हुए यह बात उन्हें बतायी। किन्नर माई भाव-विभीर होकर मुझसे लिपट गई और उनकी आँखों से आँसू बहने लगे। मैं बनारस जा रहा था अपने काम से और मैंने माई को दो दिन बाद जिस स्थान पर मिलने को बोला था उसी निर्धारित स्थान पर वहए मेरी प्रतीक्षा करते मिल गई थी। मैंने मेरी पत्नी मधू को पहले से ही यह सारे घटनाक्रम के बारे में फोन द्वारा अवगत करा दिया था। मेरी बेटी पूजा ने भी मेरे निर्णय का स्वागत किया।

> **किन्नर माई बनी परिवार का हिस्सा :-**

माई को हमारे घर आए आज पांच वर्ष हो गए है माँ को घर में एक बुजुर्ग की हैसियत प्राप्त है। घरए परिवार और परिचित लोग उनको माई संबोधित करते है और उनसे आशीष ग्रहण करते है। सनातन धर्म की मान्यतानुसार देवीय आभा मण्डल किन्नर के साथ रहता है। उनका हाथ हमेशा आशीर्वाद के लिए उठता है। वह सभी की खुशियों में शामिल होकर खुश होते है पर अपना दुःख-दर्द किसी के आगे बयां नहीं करते। उनके अंदर मानवीयता की अंश मौजूद है वे भी समाज के लिए कुछ करने का जज्बा रखते है।

प्रत्येक किन्नर का अपना एक अतीत होता है और उन पर स्वयं का झेला हुआ संघर्ष। परिवार से विस्थापन का दंश सर्वप्रथम उन्हें ही भुगतना पड़ता है। माई ने अपने जीवन की बात बताते हुए लिखा किए श्श्जब वह छोटी थी तब श्नदिया के पार"ए फिल्म आयी थी। वह फिल्म की नायिका श्गुंजाश की तरह ही हंसनें खेलने वाली उछल-कूद करती हुई लड़की थी। माता-पिता ने भी मेरा नाम उस नायिका के नाम पर श्गुंजाश रखा था। कम उम्र में उसका विवाह करा दिया गया और बाद में पता चला की वह न नर है न नारीए बल्कि वह एक किन्नर है। अंततः उसे किन्नरों का डेरा ही अपने लिए सही ठोर लगा। बाद का जीवन किन्नर गुरुओं की सेवा करने में कट गयाए पर जैसे ही बुढ़ापा आया मैं उनके लिए भी बोझ बनने लगी एक बार मेरे बीमार होने पर वह लोग शहर लाकर सरकारी अस्पताल में भर्ती कराकर चले गए। अस्पताल से निकलते ही मेरी नारकीय जिन्दगी शुरू हो गई। मेरे अच्छे कर्म थे कुछ जो आप लोग मुझे परिवार स्वरूप मिले और बुजुर्ग का माननीय दर्जा।

आज माई खुशी-खुशी हमारे साथ अपना जीवन व्यतीत करती है। जब से वह आयी है ईश्वर की असीम अनुकंपा हम पर बरस रही है। किन्नर माई का आशीर्वाद मेरे और मेरे परिवार के ऊपर प्रतिदिन-प्रतिपल बना हुआ है। मेरी पदोन्नति मेरी बेटी का न्यायिक सेवा में चयन और अच्छे घर से उसका विवाह सब किन्नर माई के आशीर्वाद से ही हुआ है। मैं अनाथालय में पला-बढ़ा हूँ। मैंने कभी अपने माँ-बाप को नहीं देखा और न ही उनकी कोई छवि मेरे मानसपटल में है। पर किन्नर माई में मुझे उनकी प्रतिमूर्ति झलकती दिखाई देती है।

----------00--------

संदर्भ सूची

1- बड़े साब एवं अन्य कहानियाँ - महेन्द्र भीष्म - काव्य पब्लिकेशन
2. माई कहानी - महेन्द्र भीष्म, पृ. 38
3. माई कहानी - महेन्द्र भीष्म, पृ. 38

----------00--------